ब्र.कु. भगवान भाई का नाम 'इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड' में दर्ज

आबू रोड। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय शांतिवन के ब्र.कु. भगवान भाई द्वारा **5000 स्कूलों** में हजारों बच्चों को मूल्यनिष्ठ शिक्षा के जरिये नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए लगातार पढ़ाये जाने पर तथा **800 जेलों** में हजारों कैदियों द्वारा अपराध को छोड़ अपने जीवन में सद्भावना, मूल्य तथा मानवता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित किए गए हजारों कार्यक्रम के जरिये संदेश देने के अथक प्रयास को **'इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड'** में दर्ज किया गया।

दिल्ली के कनाट प्लेस में 22 अप्रैल को इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड के **चीफ एडिटर विश्वरूप राय चौधरी** द्वारा एक समारोह में सम्मानित कर सर्टिफिकेट दिया गया। इस अवसर पर विश्वरूप राय चौधरी ने कहा कि ऐसे प्रयास से लोगों के जीवन में एक नई ऊर्जा का संचार होगा तथा लोगों में सद्भावना को बढ़ावा मिलेगा। ब्रृ.कु. भगवान भाई ने पिछले कई सालों से अथक प्रयास से भारत के विभिन्न प्रांतों में जाकर हजारों स्कूलों में बच्चों को तथा जेलों में कैदियों में मानवता का बीज बोने का अथक प्रयास करते रहे, जिससे यह सफलता मिली है।

इसके लिए वे माध्यमिक, उच्च माध्यमिक स्कूलों में, कॉलेजों में, आई.टी.आई. में, प्रशिक्षकों को, वाक्पिटों में जा करके नैतिकता का पाठ पढ़ाया। यह संदेश उन्होंने पदयात्रा, शिक्षा अभियान, ग्राम विकास अभियान, मोटर सायकल यात्रा, सायकल यात्रा तथा विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से भाग लेकर दिया।

ब्र.कु. भगवान भाई का कहना है कि अगर समाज के अंदर का भ्रष्टाचार, कुरीतियाँ, बुराइयाँ, व्यसन, नशा समाप्त करना चाहते हैं, तो उसके लिए स्कूलों में शिक्षा में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है क्योंकि स्कूलों से ही समाज के हर क्षेत्र में व्यक्ति जाता है। समाज को सुधारने के लिए शिक्षा में मूल्य और आध्यात्मिकता का समावेश करने की आवश्यकता है। आज के बच्चे कल का भावी समाज है। अगर भावी समाज को सुधारना चाहते हो तो वर्तमान के बच्चों को मूल्यनिष्ठ बनाने की आवश्यकता है।

महाराष्ट्र के सांगली जिले में एक साधारण परिवार में जन्मे भगवान भाई को पढ़ने-लिखने के लिए किताब व नोटबुक नहीं मिलती थी। उम्र के 11 साल से स्कूल में जाना प्रारम्भ किया। वे रद्दी की पुरानी डायरी के बचे हुए पन्ने एवं लिखे हुए पन्ने को पानी से धोकर फिर से उपयोग में लाते थे। ऐसे एक पुरानी डायरी में उनको ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के किताबों के कुछ पन्ने मिलें। उन पन्नों ने उनके जीवन को बदलकर एक महान व्यक्ति बना दिया। प्राप्त किताब के पते पर वो ब्रह्माकुमारीज़ संस्था पहुँचे जहाँ उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान व राजयोग का अभ्यास कर अपने मनोबल एवं आत्मबल को बढ़ाया, जिसके फलस्वरूप आज उन्होंने 5000 स्कूलों व जेलों में जा करके ये सेवा का रिकॉर्ड बनाया।

वर्तमान समय वे शांतिवन में कीचन में सेवा करते हुए भी अनेक मासिक पत्रिकाओं में, न्यूज पेपर में मूल्यनिष्ठ शिक्षा के बारे में लेख द्वारा सेवा करते रहते हैं। उन्होंने अब तक 2000 से अधिक लेख लिखे हैं। कारागृह में बंदिस्त कैदियों को कर्मों की गुह्य गति, तनावमुक्त जीवन, व्यसनमुक्त, संस्कार परिवर्तन, अपराधमुक्त जीवन जीने की कला आदि विषयों पर समय प्रति समय सम्बोधित करते रहते हैं।

उनका कहना है कि इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड बनने के बाद भी वे अपनी सेवा का अभियान जब तक समाज में परिवर्तन नहीं आएगा तब तक वो आजीवन समाज की सेवा करते रहेंगे, ये उनका दृढ़ संकल्प है।